

$\frac{82}{4}$

नवग्रह साम म

$\frac{82}{4}$

Nava graha Stotram .

2005

४२/५

श्री

नवग्रहसौत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं तमोर्द्वयं
 पापघ्नं **शुक्र** नोऽस्मिन्दिवाकरम् १ दक्षिणं खतुषारं मं
 दीरोदरं सौम्यं संभवं तमामिषाशिनं सोमं शंभोमुक्कट
 भूवरी २ धरणीगर्भं भूतं विद्युत्कान्तिं समप्रभम्
 ज्येष्ठांशं किं हस्तं तं मंगलं पूरुषामास्यहम् ३ प्रियं
 कालिकास्मान्नं तपराप्रतिमं बुधं सौम्यं सौम्यं मुनीकेतं
 तं बुधं पूरुषामास्यहम् ४

४२/५

देवता नो च कृषी रोगा न गुरुं को वन मी स विमम्
 वंदनीयं त्रिलोक सं तन मा मि क ह स ति म् ५
 हि म कुं द म् द्वा ला भं दृ ज्ञा नां प र मं गुरुं । सर्व शा स्त्र
 प्र ल क्ता वं मा गी वं प्र रा मा भ्य ह ६ नी ला ज न स मा भा स
 र वि पु लं म मा भ्य जं द्वा मा मा तं इ सं भू तं त न मा मि
 शानि च र म् ७ अ ध का यं म हा की र्थं चं द्रा दि त्वा वि म र्द नं
 सिं हि का ग म्भं सं भू तं तं रा दं प्र रा मा भ्य ह म् ८
 पा ला सि पु ष्य सं का रां ता र को ग्र ह मु स्ता कं । सें द्रं सें द्रा मु कं
~~मु रा र्ग~~ तं के तं प्र रा मा भ्य ह म् ।

॥ नवग्रहस्तोत्रम् ॥

४२
 ५

घोरं